प्रकाशन तिथि : 01 दिसम्बर, 2023
प्रेषण तिथि : 04 दिसम्बर, 2023

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 27 | अंक 18 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

व्यक्तित्व के आमूलचूल परिवर्तन से ही होगी ध्येयसिद्धि: संघप्रमुख श्री

(सूरत के पलसाना में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न)

श्री क्षत्रिय युवक संघ में आकर हम उस आत्मविश्वास को पाते हैं जिसके बल पर न केवल हम संसार को जीत सकते हैं बल्कि उस ईश्वर को भी प्राप्त कर सकते हैं जो हमारा ध्येय है। यह आत्मविश्वास ही हमें संसार की तामसिक शक्तियों से संघर्ष करने का बल देगा। लेकिन यह केवल बातों से नहीं हो पाएगा। शिविर में हम केवल खेल कर चले जाएं, नाच कर और गीत गाकर ही चले जाएं, उससे भी नहीं होगा। यह केवल तभी हो सकता है जब हमारे भीतर बदलाव आए, हमारे भीतर एक क्रांति घटित हो। आमूलचूल परिवर्तन को ही क्रांति कहा जाता है इसलिए हमारे संपूर्ण व्यक्तित्व में बदलाव हो जाए, तभी हमें अपना ध्येय प्राप्त हो सकेगा। जो अपने दायित्व को जान लेता है, समझ लेता है वह उस दायित्व का निर्वहन करना प्रारंभ कर देता है और यदि कोई अपने दायित्व को जानकर भी उसका निर्वहन नहीं करता तो वह उस व्यक्ति से भी अधिक निकृष्ट है जो अपने दायित्व को नहीं जानता है। संघ को हमने जान लिया है तो अब हमें बैठना नहीं है, कर्म में लग जाना है। बातें नहीं करनी है, काम करना है क्योंकि कहने से अधिक करने का महत्व है। इन सात दिनों की साधना से प्राप्त दृढ़ता, मनोबल और आत्मविश्वास हमें अपने कर्म क्षेत्र में डिगायमान नहीं होने देगा, ऐसा मेरा विश्वास है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने सूरत प्रांत के पलसाना में स्थित एसडीजे कॉलेज में आयोजित माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कही। उन्होंने कहा कि आज से सात दिन पूर्व आप सभी ने अपने हृदय में साधना का वह दीप जलाया जिसे प्रज्ज्वलित करके संसार में प्रकाश किया जा सके। इन सात दिनों में हमने यहां उस यज्ञ का आयोजन किया जो संसार में विद्यमान तमस को मिटाकर प्रकाश फैला सके।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

धंधुका (गुजरात) में सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर संपन्न

गुजरात के गोहिलवाड़ प्रांत में सात दिवसीय मातृशक्ति प्रशिक्षण शिविर 17 से 23 नवंबर तक श्री चुडासमा राजपूत छात्रावास, धंधुका में आयोजित हुआ। जागृति बा हरदासकाबास ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने प्रथम दिन शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए कहा कि वर्तमान समय में जो शिक्षण परिवार में, विद्यालयों में या अन्य किसी भी स्थान पर नहीं मिलता है वह शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ इन शिविरों के माध्यम से हमें उपलब्ध करवा रहा है। यह शिक्षण जीवन जीने का शिक्षण है, जीवन को श्रेष्ठ बनाने का शिक्षण है। यहां जो कुछ हमें सिखाया जा रहा है यदि हमने उसे अपने आचरण में ढाल लिया तो हमारा जीवन ऐसा बन जाएगा जो दूसरों को भी प्रेरणा देने वाला होगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की प्रतिमा का अनावरण

देश में वर्तमान में सभी राजनीतिक दल अन्य पिछड़ा वर्ग की राजनीति कर रहे हैं। इस वर्ग की राजनीति कर बिहार में लालु प्रसाद, नीतीश कुमार, शरद यादव आदि ने अपनी राजनीतिक फसल लहलहाई वहीं उत्तरप्रदेश में मुलायम सिंह यादव की समाजवादी पार्टी ने अपनी फसल लहलहाई। राष्ट्रीय स्तर पर दोनों प्रमुख दलों के नेता आज इस वर्ग के हितों की बात कर रहे हैं लेकिन इस वर्ग के हितों के लिए बने मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने वाले एवं सामाजिक न्याय के इस रूप में प्रणेता पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह को कोई याद नहीं करता।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विभिन्न स्थानों पर हुआ दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रमों का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त अनेक स्थानों पर दीपावली स्नेहमिलन आयोजित किए गए। जयपुर में जोबनेर गढ़ में दीपावली स्नेह मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 15 नवंबर को हुआ। इस अवसर पर समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले समाजबंधुओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने कहा कि संघ समाज में संस्कार निर्माण के माध्यम से संस्कृति संरक्षण का कार्य भी कर रहा है। समाज के बालक-बालिकाओं में संस्कारों का निर्माण करके ही हमारी संस्कृति पर होने वाले आक्रमणों को विफल किया जा सकता है। संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली में शिविर व शाखाओं के माध्यम से युवाओं को त्याग, अपनत्व, संघर्षशीलता जैसे गुणों का अभ्यास कराने के साथ ही उनमें समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति दायित्वबोध भी विकसित किया जाता है। उन्होंने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की सौंवी जयंती आगामी 28 जनवरी को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में समारोह पूर्वक मनाई जाएगी जिसमें आप सब भी आमंत्रित हैं। समारोह का प्रारंभ कर्ण नरेन्द्र सिंह जी की प्रतिमा के समक्ष द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। रावल संग्राम सिंह जोबनेर ने कर्ण नरेंद्र सिंह जी का परिचय दिया एवं कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर व जोबनेर गढ़ के इतिहास की भी जानकारी दी। श्री राजपूत सभा जयपुर ग्रामीण के अध्यक्ष मोती सिंह सांवली ने कहा कि नरेन्द्र सिंह जी के त्याग को याद रखते हुए समाज के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को आगे बढ़ाने में हम सभी को सहयोगी बनना चाहिए। आरएएस अधिकारी राजेन्द्र सिंह शेखावत ने क्षत्रिय धर्म के संबंध में अपने विचार रखे और राजपूत समाज की वर्तमान समस्याओं व उनके समाधान के बारे में बताया। राजेन्द्र सिंह मंडा ने आयोजन व्यवस्था का दायित्व संभाला। कार्यक्रम में जोबनेर क्षेत्र के विभिन्न गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघशक्ति में बरवाली गांव के समाजबंधुओं का पारिवारिक स्नेहमिलन संपन्न

जयपुर शहर में निवासरत बरवाली गांव के समाजबंधुओं का पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में 19 नवंबर को आयोजित हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। उन्होंने पारिवारिक भाव का महत्व बताते हुए कहा कि परिवार की कोई भी आवश्यकता उस परिवार के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता होती है, परिवार पर आने वाला संकट भी प्रत्येक सदस्य का संकट होता है और परिवार की उन्नति में भी परिवार के हर सदस्य की उन्नति निहित होती है।

इसलिए समाज में पारिवारिक भाव का निर्माण आवश्यक है क्योंकि पारिवारिक भाव से जुड़े होने पर ही समाज की सामूहिक शक्ति निर्मित हो सकती है और सामूहिक शक्ति से ही समाज आगे बढ़ सकता है। समाज को मातृस्वरुप समझते हुए उसकी संतान के रूप में हमें अपने कर्तव्य का पालन करना है। हम जहां भी, जिस भी स्थिति में हों, उसी में जो कुछ हम समाज के हित में सहयोग दे सकते हैं, वह देना चाहिए। उन्होंने कहा कि जयपुर जैसे शहर में इतनी बड़ी संख्या में एक ही गांव के लोगों का रहना और आपस में निरंतर संपर्क व सहयोग बनाए रखना पारिवारिक भाव का श्रेष्ठ उदाहरण है। हम सभी को प्रयास करना चाहिए कि हम अपने परिवार को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जोड़ें जिससे पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाया जा सके। यह वर्ष पूज्य श्री तनसिंह जी का जन्म शताब्दी वर्ष है जिसका मुख्य कार्यक्रम 28 जनवरी को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित होगा जिसमें आप सभी ग्रामवासियों को सम्मिलित होना है। भंवर सिंह बरवाली ने बरवली फाउंडेशन का संक्षिप्त परिचय दिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

व्यक्तित्व के आमूलचूल परिवर्तन से ही होगी ध्येयसिद्धिः संघप्रमुख श्री

(पेज एक से लगातार)

हमारे मन में यह विचार आ सकता है कि केवल सात दिन की अवधि में यह कार्य कैसे किया जा सकता है, लेकिन जब भी कोई महान कार्य हाथ में लिया जाता है तो उसके लिए समय की सदैव कमी ही रहती है। लेकिन हम महापुरुषों के जीवन को देखें तो उन्होंने उस कम समय में ही उन महान कार्यों को कर-के दिखाया है। संघ हमें भी उन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में खड़ा करना चाहता है। पूज्य तनसिंह जी जैसी दिव्य आत्माएं इस संसार में अपने प्रारब्ध के कारण नहीं बल्कि समाज कल्याण के अपने संकल्प के कारण अवतरित होती हैं। ऐसे महापुरुष अपने छोटे से जीवन काल में भी इतना कार्य कर जाते हैं कि आने वाले सैकड़ो वर्षों तक समाज उनसे प्रेरणा प्राप्त करता है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमें एक ऐसा मार्ग प्रदान किया है जिस पर चलकर हम भी बुद्ध, महावीर, राम और कृष्ण की भांति महान बन सकते हैं। ऐसा मार्ग प्रदान करने वाले युगपुरुष कभी-कभी ही जन्म लेते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस मार्ग पर चलने का अवसर मिला है। उनमें भी वह वास्तव में सौभाग्यशाली है जो इस आए हुए अवसर को गंवाता नहीं है। मिले हुए अवसर का सदुपयोग न करने से सौभाग्य भी दुर्भाग्य में बदल जाता है। संघप्रमुख श्री के संचालन में 16 से 22 नवंबर तक आयोजित इस शिविर में गुजरात के सुरेंद्रनगर, भावनगर, अहमदाबाद, धोलेरा एवं राजस्थान के जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, नागौर, जयपुर आदि स्थानों से आए 100 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के प्रथम दिन शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उनका स्वागत करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि आज हम जिस साधना का प्रारंभ करने जा रहे हैं, वह अनूठी साधना है। संसार की परंपरागत साधना से यह साधना अलग है। इस अनूठी साधना का सूत्रपात 77 वर्ष पूर्व पूज्य श्री तन सिंह जी ने किया। यह साधना महापुरुषों को निर्मित करने की साधना है। मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है, दायित्व क्या है, इन सब बातों को जानने और पहचानने का प्रयत्न इन सात दिनों में हम करेंगे। यह प्रयत्न तभी सफल होगा जब जो कुछ हमें हमारे शिक्षक, घटनायक, पथक शिक्षक आदि द्वारा कहा जाए, हम उसका पालन करें। परिणाम की चिंता छोड़कर यदि हमने आज्ञा का पालन करना सीख लिया तो हमारे जीवन में सांख्य योग घटित होना प्रारंभ हो जाएगा और तब हम स्वयं की पहचान करने में भी सफल होंगे। जिस प्रकार समुद्र में गहराई में ही मोती मिलते हैं, उसी प्रकार यहां भी जो संघ की गहराई में उतरेगा, उसी को मोती प्राप्त होंगे। इसलिए गंभीरतापूर्वक यहां की प्रत्येक गतिविधि में भाग लें।

बालेसर के माधो सिंह इंदा हुए शहीद, सैन्य सम्मान के साथ दी अंतिम विदाई

जोधपुर के बालेसर क्षेत्र के देवनगर दुर्गावता गांव के निवासी एवं भारतीय सेना के जवान माधोसिंह पुत्र कुंभ सिंह इंदा 23 नवंबर को जम्मू-कश्मीर के राजौरी क्षेत्र में आतंकियों से मुठभेड़ के दौरान शहीद हो गए। 15 राजपूताना राइफल्स में राइफलमैन के रूप में सेवाएं दे रहे माधोसिंह जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा पर तैनात थे। उनके पिता कुंभ सिंह भी भारतीय सेना में कप्तान के पद से सेवानिवृत हैं एवं उनके दादा पनेसिंह भी भारतीय सेना में सेवा दे चुके हैं। 2014 में भारतीय सेना में नियुक्त होने वाले माधोसिंह के परिवार में दादी, माता-पिता, भाई, वीरांगना एवं तीन वर्षीय पुत्री एवं डेढ़ वर्षीय पुत्र है। उनकी पार्थिव देह शनिवार को उनके पैतृक गांव पहुंची जहां पूरे सैन्य सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। शहीद के बड़े भाई चतुर सिंह ने मुखाग्नि दी। बड़ी संख्या में क्षेत्रवासियों ने उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होकर राष्ट्र की रक्षा करते हुए उनके द्वारा दिए इस सर्वोच्च बलिदान के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। 15 राजपूताना राइफल्स के जवानों की टुकड़ी ने हवाई फायर के बाद शस्त्र उल्टे कर, मातमी धुन बजाकर गार्ड ऑफ ऑनर दिया। सैन्य अधिकारी मेजर गुरविंदर सिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल अंशूम रेडू, मेजर राहुल विश्वास, पूर्व विधायक बाबू सिंह राठौड़, पीसीसी सदस्य उमेद सिंह राठौड़, पूर्व प्रधान भंवर सिंह इंदा, उपखंड अधिकारी पुष्पा कंवर सिसोदिया, अधिशासी अधिकारी सोम प्रकाश मिश्रा, अधिशासी अभियंता जेत सिंह, पुलिस उपाधीक्षक पदम दान चारण, थाना अधिकारी सवाई सिंह महाबार सहित अन्य अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों ने पुष्प चक्र अर्पित कर शहीद को श्रद्धांजलि दी।

संघशक्ति में जयपुर सम्भाग के सहयोगियों की बैठक संपन्न

जयपुर स्थित संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में जयपुर संभाग द्वारा शताब्दी वर्ष समारोह के निमित्त सहयोगियों की सम्भाग स्तरीय बैठक का आयोजन 27 नवंबर को हुआ। बैठक में 100 बसों द्वारा 5000 लोगों सहित कार्यक्रम में सम्मिलित होने की कार्ययोजना बनाई गई। इस हेतु उपस्थित कार्यकर्ताओं द्वारा अलग-अलग क्षेत्रों के लिये कार्यविभाजन कर दल बनाये गए और क्षेत्रानुसार सहयोगियों की सूची बनाने व उनसे संपर्क करने पर चर्चा हुई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर सम्भाग प्रमुख राजेन्द्र सिंह बोबासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बैठक में लगभग 100 से अधिक सहयोगियों ने उपस्थित रहकर जन्म शताब्दी समारोह की तैयारियों पर चर्चा की। बैठक में नरेन्द्र सिंह सिंघासन व अर्जुन सिंह नीटूटी व अन्य सहयोगियों द्वारा सिंह भूमि व जसवंत नगर में संपर्क व बसों की व्यवस्था की जिम्मेदारी ली गई। शिशुपाल सिंह गोरिया बारिजा व सहयोगियों ने सुशांत सिटी, मंगलम सिटी व माचवा क्षेत्र की जिम्मेदारी ली। जितेंद्र सिंह बावड़ी ने अधिवक्ताओं की बस का दायित्व लिया। अरविंद सिंह डूड़िया (अधिवक्ता) ने चांद बिहारी क्षेत्र में सहयोग का दायित्व लिया। जयपालसिंह मांडोता व ललित सिंह साँचोरा (जयपुर व्यपार मंडल अध्यक्ष) ने समस्त व्यापार मंडल द्वारा सहयोग करने की बात कही। विजय सिंह गौरिसर ने निवारू क्षेत्र से 5 बसों की व्यवस्था एवं गजेंद्र सिंह बड़वाली ने सहयोगियों के साथ मिलकर वार्ड 41 व 42 से लगभग 10 बसों की जिम्मेदारी ली। जितेन्द्र सिंह हिरनोदा द्वारा वार्ड 43, 44, 45, 46, 47, 48 व 53 की जिम्मेदारी ली गई है, वहीं प्रवीण सिंह विजयपुरा ने चौमू पुलिया से हरमाड़ा घाटी तक के क्षेत्र में संपर्क का दायित्व लिया। महेंद्र सिंह खेड़ी ने सभी के साथ मिलकर सहयोग करने की बात कही।

कोटड़ा नायाणी (गुजरात) में सरस्वती सम्मान समारोह व रक्तदान शिविर का आयोजन

गुजरात में कोटडा नायाणी राजपूत सेवा समाज द्वारा भाई दूज के दिन विद्यार्थी सरस्वती सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इसके साथ ही राजकीय सेवा में नियुक्त होने वाले, राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त होने वाले एवं अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने वाले समाजबंधुओं का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम के पश्चात रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया। राज्यसभा सांसद केशरीदेवसिंह झाला और श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीणसिंह सोलिया सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। गांव में नवनिर्मित समाज हॉल का उद्घाटन भी कार्यक्रम के दौरान किया गया। किरणसिंह (पर्व मेटल) द्वारा रामदेव पीर मंदिर के हॉल के ऊपर एक कमरा बनाने एवं भूमि ग्रुप गोंडल व मुलूजीभा बापूजी परिवार कोटडा नायाणी द्वारा पूज्य श्री के जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त एक कमरा बनाने की घोषणा की गई। कार्यक्रम का संचालन कोटड़ा नायाणी के अजयसिंह, भगीरथसिंह व अर्जुनसिंह ने किया। सभी उपस्थित समाजबंधुओं को पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण भी दिया गया। पुलिस से सेवानिवृत्त हुए प्रदीपसिंह, शक्तिसिंह कोटड़ानायाणी एवं साफा पाघड़ी के विशेषज्ञ विक्रमसिंह कोटड़ानायाणी का विशेष सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया।

मूलाना में मनाया पीर श्री पिथोरा जी स्मृति दिवस

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त जैसलमेर संभाग के चांधन प्रांत के मूलाना गांव में पीर श्री पिथोरा जी का स्मृति दिवस 15 नवंबर को मनाया गया। गांव में स्थित पीर श्री पिथोरा जी मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रांत प्रमुख उम्मेद सिंह बड़ोडा गांव के निर्देशन में सामूहिक यज्ञ किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक रतन सिंह बड़ोडा गांव ने सभी को पूज्य श्री तनसिंह जी के बारे में बताते हुए जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। तने सिंह काठा ने पीर श्री पिथोरा जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। अचल सिंह दवाड़ा ने भी अपने विचार रखे।

लणवा (मेहसाणा) में नववर्ष स्नेहमिलन संपन्न

मेहसाणा प्रांत के लणवा गांव में 14 नवंबर को राजपूत परिवारों का नववर्ष स्नेहमिलन कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में गोविंदसिंह लणवा और महेशसिंह जगन्नाथपुरा ने आयोजन का दायित्व संभाला। श्री क्षत्रिय युवक संघ के उत्तर गुजरात संभाग प्रमुख विक्रमसिंह कमाना ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय प्रस्तुत किया एवं जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम में मातृशक्ति सहित सैकड़ों समाजबंधु उपस्थित रहे।

संपादकीय

'विरोध में गरिमा और सहयोग में कर्मठता लाएं'

एक व्यक्ति के रूप में जीवन जीते हुए हम अनेक व्यवस्थाओं के साथ स्वयं को संबद्ध पाते हैं जैसे परिवार, विद्यालय, कार्यालय, समाज, राष्ट्र, पंथ, विभिन्न संस्थाएं आदि-आदि। ऐसी समस्त व्यवस्थाओं में हमारी ही भांति अनेक अन्य व्यक्तियों की भी संबद्धता होती है और इसलिए उन व्यक्तियों के साथ भी हमारे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष संबंध बनते हैं, विभिन्न माध्यमों से व विभिन्न रूपों में आपसी संवाद और व्यवहार भी घटित होता है। जैसे-जैसे तकनीकी विकास का सहारा पाकर मानव सभ्यता द्रुत गति से विकास पा रही है, वैश्वीकरण जैसी परिघटनाओं के कारण जैसे-जैसे विभिन्न व्यवस्थाओं के बीच की स्पष्ट भेद रेखाएं धूमिल होकर ये व्यवस्थाएं अधिकाधिक अंतर्संबन्धित बन रही हैं, वैसे-वैसे व्यक्ति की इन व्यवस्थाओं और इनसे संबद्ध अन्य व्यक्तियों के साथ अंतर्क्रियाएं अधिक तीव्र, व्यापक और जटिल बनती जा रही हैं। हमारे पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, राजनैतिक आदि सभी संबंधों और व्यवहारों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है और इन सबके संबंध में पूर्व स्थापित धारणाएं, मान्यताएं आदि बहुत तेजी से बदल रही हैं। ऐसे में व्यक्ति या समूह के रूप में हमारे अन्य व्यक्तियों और समूहों के साथ अनिवार्य रूप से संबंध बनते हैं और ये संबंध या तो विरोध के होते हैं अथवा सहयोग के। पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय समूह के अंग के रूप में हम विरोध और सहयोग के इन अनिवार्य संबंधों से सर्वथा अछूते नहीं रह सकते और हमें इनमें भागीदार बनना ही पड़ता है और बनना भी चाहिए क्योंकि पलायनवादी प्रवृत्ति कभी भी विकास और उन्नति का आधार नहीं बन सकती। संघर्ष, पराक्रम और पुरुषार्थ से ही जीवन में प्रगति के द्वार खुला करते हैं, यथास्थिति को स्वीकार करके निष्क्रिय हो जाने या चुनौतियों से पलायन करने से केवल जड़ता ही घनीभूत होती है। अतः जीवन में जहां भी अनिवार्य विरोध अथवा सहयोग का प्रश्न आता है, वहां हमें साहसपूर्वक इनमें नियोजित होना ही चाहिए।

विरोध और सहयोग के इन संबंधों में हम किस प्रकार प्रवृत्त होते हैं और किस प्रकार हमें प्रवृत्त होना चाहिए, यह मुख्य और विचारणीय बात है। पहले हम विरोध की बात करें जो निहित स्वार्थों की टकराहट के इस युग में अधिक प्रचलित और प्रसारित है। जीवन में विरोध स्वाभाविक है चाहे वह विरोध हम किसी के प्रति करें या कोई हमारे प्रति करें। विरोध प्रत्यक्षतः व्यक्ति के लिए अरुचिकर होते हुए भी अनेक बार जीवन की एकरसता, एकपक्षीयता और जड़ता को तोड़ने वाले तत्व की भूमिका निभाता है। इस दृष्टिकोण से विरोध तत्वतः कोई बुरी वस्तु नहीं है लेकिन उस विरोध को बुरा बनाती है उसमें समाविष्ट हुई कटुता, घृणा, येन केन प्रकारेण सफल होने के लिए अपनाई गई अनैतिकता और विरोध को बदलाव के साधन की अपेक्षा साध्य समझ लेने की कट्टरता। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हम वर्तमान राजनीति में देख सकते हैं जहां प्रतिपक्षी का विरोध करते हुए समस्त मयार्दाओं और नैतिकता का उल्लंघन सामान्य परिपाटी बनती जा रही है। अमर्यादित और अनैतिक विरोध की यह परिपाटी राजनीति से होते हुए जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी प्रवेश करती जा रही है। परिवार और समाज में आपसी विरोध के विभिन्न अवसरों पर भी ऐसा होते हुए हम प्रायः देख सकते हैं। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि विरोध के वर्तमान नकारात्मक स्वरूप को प्रसारित होने से रोका जाए और उसके स्थान पर विरोध में गरिमा की स्थापना की जाए। ऐसे गरिमापूर्ण विरोध का उदाहरण हम पूज्य श्री तनसिंह जी के जीवन में देख सकते हैं। भारत चीन युद्ध के समय भारतीय संसद में दिया गया उनका ऐतिहासिक भाषण, जिसमें उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से राजनैतिक विरोध होते हुए भी संकट के समय उनके साथ खड़े होने और उनके पूर्ण समर्थन की बात कही थी, गरिमापूर्ण विरोध का अनुकरणीय उदाहरण है। चाहे परिवार में हो, समाज में या अन्य किसी क्षेत्र में, जब भी हमारा किसी से विरोध होने की स्थिति बने तो उस विरोध में भी हम गरिमा को बनाए रखें, कटुता, घृणा और कुंठा को अपने पर हावी न होने दें, यह आवश्यक है। ऐसा करने पर वह विरोध भी नवीन प्रगति की भूमिका बन सकता है और यदि ऐसा न भी हो तो भी वह विरोध कम से कम पारिवारिक और सामाजिक विखंडन का कारण नहीं बनेगा। यहां यह भी समझना आवश्यक है कि विरोध में जो भी कटुता या गरिमा का तत्व आता है उसका स्रोत वह व्यक्ति ही है जो विरोधी की भूमिका में है और इसलिए व्यक्ति के व्यक्तित्व को गरिमापूर्ण बना कर ही विरोध में भी गरिमा की स्थापना की जा सकती है।

इसी प्रकार हम सहयोग की बात करें तो वर्तमान में सहयोग भी शाब्दिक और औपचारिक बन कर रह गया है। कई बार अनेक लोगों द्वारा भावनात्मक रूप से सहयोगी होने की बात भी कही जाती है लेकिन वास्तविक सहयोग तो कर्म द्वारा ही प्रकट होता है। जहां सहयोग की आवश्यकता हो, उसे शब्दों और भावनाओं से पूरा नहीं किया जा सकता बल्कि कर्म करके ही उस आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। जिस प्रकार यज्ञ को प्रज्वलित रखने के लिए आहुति की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सहयोग भी कर्मठता से ही फलीभूत होता है। वास्तव में जीवन में सहयोगी की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सर्वाधिक कठिन भी है, चाहे यह भूमिका किसी भी क्षेत्र में निभाई जाए। सहयोगी बनने के लिए न केवल अपने अहंकार को मिटाना पड़ता है बल्कि त्याग की क्षमता भी जुटानी पड़ती है। त्याग की क्षमता के बिना किसी भी व्यक्ति द्वारा सहयोगी की भूमिका अंगीकार नहीं की जा सकती और न ही अपने अहंकार को गलाए बिना किसी का सच्चा सहयोगी बना जा सकता है। यहां यह भी समझना आवश्यक है कि हमारा सहयोग जितने महान लक्ष्य के लिए होगा, उतनी ही हमारे जीवन में भी महानता का प्रवेश होगा। इसलिए ऐसे महान लक्ष्य की पहचान करके उस लक्ष्य के प्रति हम कर्मठ सहयोगी बन जाएं, यह परम सौभाग्य की बात है, यद्यपि यह अनुभव से ही समझा जा सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में इसीलिए कर्म को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है क्योंकि बिना कर्म के सहयोग केवल सहयोग का दिखावा ही है जिससे किसी भी लक्ष्य की सिद्धि नहीं हो सकती। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने लिखा है कि 'कर्म ही भाग्य निर्माता है और कर्म ही हमारे अस्तित्व का एकमात्र औचित्य है।' अतः हम भी जब सहयोगी बनें तो अपनी कर्मठता से उस सहयोग को प्रकट करें और परिस्थितिवश जब हम किसी के विरोध की भूमिका में हों तो उस भूमिका का भी निर्वहन गरिमापूर्ण ढंग से करें। श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी प्रणाली में उक्त गरिमा और कर्मठता को हमारे आचरण का अंग बनाने का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिलता है। आएं, स्वयं को इसमें नियोजित करें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

कुंवर पृथ्वीराज और जयमल की मृत्यु के बाद महाराणा रायमल को जब कुंवर सांगा के बारे में सूचना मिली कि वो अजमेर के श्रीनगर के कर्मचन्द परमार के पास रह रहे हैं तो महाराणा ने उनको बुलाकर अपना उत्तराधिकारी बनाया। महाराणा रायमल की मृत्यु के बाद महाराणा सांगा वि.सं. 1566 (ई.सं. 1509) को मेवाड़ के शासक बने। शासक बनने के बाद महाराणा ने अपने प्रशासन, सैन्य कुशलता, राजनीति से मेवाड़ को शीघ्र ही भारत की एक प्रमुख शक्ति बना दिया। ईडर के राव भाल के बाद उसका पुत्र सूर्यमल्ल शासक बना, लेकिन कुछ समय बाद उसकी मृत्यु होने के बाद उसका अल्पव्यस्क पुत्र रायमल ईडर का राजा बना, उसके कम आयु का होने का लाभ उठाते हुए उसके चाचा भीम ने उसको गद्दी से उतार कर राज्य पर अधिकार कर लिया। रायमल मेवाड़ चला गया, थोड़ा बड़ा होने पर महाराणा सांगा के सहयोग से ईडर पर अधिकार कर लिया, उस समय ईडर पर भीम के पुत्र भारमल का शासन था। जिसे गुजरात के सुल्तान का सहयोग प्राप्त था। गुजरात के सुल्तान ने अहमद नगर के हाकिम निजामुल्मुल्क को ईडर पर आक्रमण के लिए भेजा जिसने ईडर को जा घेरा। रायमल को ईडर को छोड़कर पहाड़ों में जाना पड़ा जहां से वह आक्रमण कर गुजरात की सेना को नुकसान पहुंचाने लगा। इसी समय निजामुल्मुल्क ने एक भाट के सामने महाराणा सांगा के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया, महाराणा सांगा को यह पता चलने पर निजामुल्मुल्क को सबक सिखाने और रायमल को ईडर वापिस दिलवाने सैन्य अभियान किया। महाराणा के ईडर पहुंचने पर निजामुल्मुल्क ईडर छोड़कर भाग कर अहमद नगर के किले में चला गया, महाराणा ने ईडर की गद्दी पर रायमल को पुनः आसीन किया और अहमदनगर को जा घेरा। मुस्लिम सेना किले के अन्दर से महाराणा की सेना पर आक्रमण कर रही थी। इस युद्ध में वांगड़ के डूंगरसिंह चौहान के परिवार ने अद्भुत वीरता का प्रदर्शन किया, वह स्वयं बुरी तरह घायल हुआ और उसके कई भाई-बेटे वीरगति को प्राप्त हुए। डूंगरसिंह के पुत्र कान्हसिंह ने अतुलनीय वीरता का प्रदर्शन किया। किले के दरवाजे को तोड़ने के लिए जब हाथी को आगे बढ़ाया गया तब दरवाजे पर लगे लोहे के तीक्ष्ण भालों के कारण हाथी आगे नहीं बढ़ा। यह देखकर वीर कान्हसिंह ने भालों के आगे खड़े होकर महावत को कहा कि अब हाथी को मेरे बदन पर झोंक दो। हाथी की टक्कर से तीक्ष्ण भालों से कान्हसिंह का शरीर छिन्न-भिन्न हो गया। पर साथ ही दरवाजा भी टूट गया। कान्हसिंह के इस बलिदान से प्रेरित व उत्साहित राजपूत सेना ने किले में गुजरात की सेना को काट डाला। निजामुल्मुल्क किले की पीछे की खिड़की से भाग गया। नदी के दूसरे किनारे पर ठहरी मुस्लिम सेना पर महाराणा ने पुनः आक्रमण किया, मुस्लिम सेना बुरी तरह परास्त हुई और उसमें भगदड़ मच गई। मुस्लिम सेना के बहुत सेनानायक मारे गए और सुल्तान की सेना अहमदाबाद को भाग गई, इसके बाद महाराणा ने बड़नगर पर अधिकार कर वीसलनगर पर आक्रमण किया। वीसलनगर का हाकिम हातिम खां मारा गया। गुजरात के दुर्ग को चुर-चुर करके महाराणा सांगा मेवाड़ लौट गए। (क्रमशः)

RAS 2021 में चयनित राजपूत समाज के अभ्यर्थियों की सूची

राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आरएएस परीक्षा - 2021 का अंतिम परिणाम 17 नवंबर को घोषित किया, जिसमें चयनित राजपूत अभ्यर्थियों की सूची विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स एवं व्यक्तिगत संपर्क द्वारा जुटाने का प्रयास किया गया है और उसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है। हमने इसे हमारे स्तर पर प्रमाणिक बनाने का प्रयास किया है, फिर भी त्रुटि की संभावनाएं शेष हैं इसलिए पाठकों को पूर्ण प्रमाणिक सूचनाओं के लिए व्यक्तिगत प्रयास करने चाहिए।

क्र.सं.	रैंक	नाम व गांव
1.	4	विश्वजीत सिंह जैतावत (सारंगवास, सोजत)
2.	13	दीपशिखा (कालवी)
3.	15	कर्मवीर सिंह (उंडखा)
4.	20	सेजल शेखावत (महनसर, नागौर)
5.	41	हिमांशु सिंह पंवार
6.	44	शीशपाल सिंह सोढ़ा (सचियापुरा)
7.	48	अर्जुनपाल सिंह राठौड़
8.	69	भानुप्रताप सिंह राठौड़
9.	92	अभिजीत सिंह साँखला
10.	112	जयपाल सिंह जैतावत (खोखरा)
11.	113	देवेंद्र प्रताप सिंह भाटी
12.	-	देवेंद्र सिंह चौहान (नेत्रहीन श्रेणी में प्रथम स्थान)
13.	124	नीलम कंवर
14.	127	गिरिराज सिंह राणावत (टीएसपी रैंक - 2)
15.	128	देवयानी डोडिया
16.	130	वीरेंद्र सिंह भाटी
17.	148	ऋतुराज सिंह चुण्डावत (सेलागुडा, राजसमंद)
18.	156	भूमल चौहान (नोलियावाडा, डूंगरपुर)
19.	175	अमिता राठौड़
20.	191	प्रवीण सिंह सोढ़ा (दवाड़ा)
21.	202	निकिता राठौड़
22.	206	देवेंद्र सिंह चौहान (चिबुड़ा, डूंगरपुर)
23.	213	राजेन्द्रकरण सिंह करणोत
24.	217	विजयश्री कँवर
25.	209	समीक्षा शेखावत
26.	221	चंदन सिंह इन्दा
27.	228	मीनल सिंह राजावत
28.	239	गिरिराज सिंह राठौड़ (भढ़ाना, मुंडवा, नागौर)
29.	240	जोगेंद्र सिंह शेखावत
30.	245	गोविंद सिंह
31.	246	भगवान सिंह चौहान
32.	258	हितेंद्र प्रताप सिंह कुंपावत (गुढा राम सिंह, पाली)
33.	270	युवराज सिंह शेखावत
34.	289	महेंद्र सिंह सोढा (केरु)
35.	294	जयदीप सिंह हाड़ा
36.	304	कमलेश्वर सिंह सोलंकी (पुनमनगर)
37.	313	राजेंद्र करण सिंह चौहान (शोभ)
38.	316	जितेंद्र सिंह राठौड़ (पायला कल्ला, सिणधरी)
39.	331	दीपेन्द्र सिंह नाथावत
40.	337	कल्याण सिंह भाटी
41.	349	राजपाल सिंह राठौड़
42.	360	नरेंद्र सिंह (कोलिया)
43.	363	संजय सिंह पंवार
44.	368	चंद्रवीर सिंह देवड़ा
45.	369	मधु राठौड़
46.	382	शक्ति सिंह शेखावत (लिसाडिया, सीकर) (भूतपूर्व वायुसैनिक)
47.	402	पूनम शेखावत (करीरी)
48.	416	रामकरण सिंह
49.	428	गरिमा राठौड़ (टीएसपी रैंक 8)
50.	430	ऋषभ राज सिंह राणावत
51.	432	भरत सिंह
52.	451	भवानी सिंह (जुराथड़ा)
53.	452	कुलदीप सिंह राठौड़
54.	459	केपी सिंह शेखावत (सिंहासन)
55.	468	छैल सिंह इन्दा
56.	478	चंचल शेखावत (करड)
57.	485	कृष्णपाल सिंह शेखावत
58.	528	राजबहादुर सिंह
59.	542	पूर्ण सिंह
60.	545	नरपत सिंह (गिराब)
61.	550	लक्ष्मण सिंह चौहान (गादेरी)
62.	554	अभिषेक चाँम्पावत (मालारी)
63.	527	महताब सिंह
64.	602	भगवान सिंह शेखावत
65.	610	रवींद्र प्रताप सिंह
66.	639	वीरेंद्र सिंह राठौड़
67.	640	पंकज सिंह भाटी (लवेरा कलां)
68.	663	भवानी सिंह (पूर्व नौसैनिक)
69.	655	अमरजीत सिंह शेखावत
70.	698	डॉ अक्षि शेखावत
71.	703	दीपक सिंह शेखावत
72.	-	धीरेंद्र प्रताप सिंह (पूर्व सैनिक)
73.	-	मनमोहन सिंह राठौड़ (पूर्व सैनिक)
74.	-	सूर्यभान सिंह (पूर्व सैनिक)
75.	-	फतेह सिंह (पूर्व नौसैनिक)
76.	-	योगेन्द्र सिंह नरूका (पूर्व सैनिक)
77.	-	अर्जुन सिंह राठौड़ (पूर्व सैनिक)
78.	-	दिलीप सिंह राठौड़ (पूर्व नौसैनिक)
79.	-	हेमंत सिंह शेखावत (ईएसएम)
80.	-	गौरव सिंह चौहान टीएसपी एक्स रैंक - 03 (बेड़सा, डूंगरपुर)
81.	-	दिलावर सिंह चौहान, टीएसपी रैंक -13 (गड़ा कुम्हारिया, डूंगरपुर)
82.	-	विनीत सिंह परमार धौलपुर
83.	-	आदित्य सिंह राजावत
84.	-	दिव्यवर्धन सिंह राजावत, टीएसपी रैंक 10 (खेड़ा कछवासा, डूंगरपुर)
85.	-	भीख सिंह राठौड़ रोड़ा (पूर्व सैनिक)

दिव्याकृति सिंह ने सऊदी इक्वेस्ट्रियन फेडरेशन कप में जीते तीन पदक

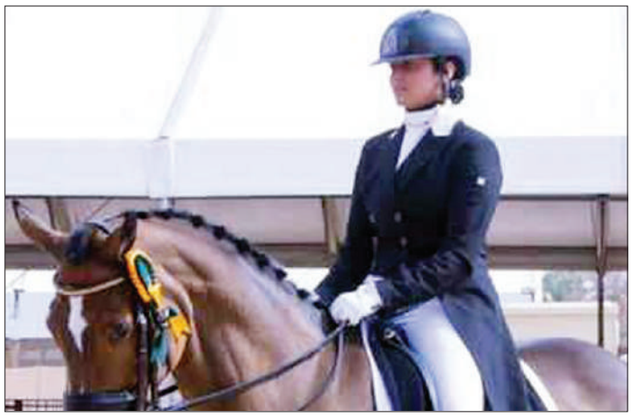

ख्यातिनाम अंतर्राष्ट्रीय महिला घुड़सवार दिव्याकृति सिंह ने हाल ही में सऊदी अरब की राजधानी रियाद के जंप सऊदी हेडक्वार्टर में आयोजित सऊदी इक्वेस्ट्रियन फेडरेशन कप प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तीन पदक जीते। 23 वर्षीय दिव्याकृति ने ड्रेसाज प्रिक्स सेंट जॉर्जेस इवेंट में रजत पदक प्राप्त किया जबकि ड्रेसाज इंटरमीडिएट 1 एवं ड्रेसाज फ्रीस्टाइल टु म्यूजिक इवेंट में उन्होंने कांस्य पदक जीते। विगत दिनों एशियन गेम्स में ड्रेसाज टीम इवेंट में स्वर्ण पदक जीतने वाली दिव्याकृति का यह प्रदर्शन 2024 में आयोजित होने वाले विश्व कप के दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है। दिव्याकृति सिंह नागौर जिले के पीह गांव की निवासी है। वे पोलो के प्रसिद्ध खिलाड़ी विक्रम सिंह की पुत्री व श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं लेखक कर्नल हिम्मत सिंह पीह की पौत्री है।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त तैयारी, संपर्क बैठकों व विशेष शाखाओं का आयोजन

महेन्द्रगढ़

केलवाद

जयसमंद

पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विभिन्न स्थानों पर तैयारी एवं संपर्क बैठकों के आयोजन का क्रम निरंतर जारी है। साथ ही जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त विभिन्न स्थानों पर विशेष शाखाओं का आयोजन कर-के दिल्ली में होने वाले मुख्य समारोह का निमंत्रण भी दिया जा रहा है। इसी क्रम में 26 नवंबर को चितौड़गढ़ प्रांत की विशेष साप्ताहिक शाखा का आयोजन लांगच गांव में किया गया। सामूहिक यज्ञ के पश्चात श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली ने संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया एवं 28 जनवरी 2024 को जवाहर लाल नेहरु स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित होने वाले जन्म शताब्दी समारोह में ज्यादा से ज्यादा संख्या में शामिल होने का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम में जन्म शताब्दी वर्ष पताका वितरित की गई एवं संघ शक्ति, पथ प्रेरक, संघ साहित्य उपलब्ध करवाया गया। विशेष ट्रेन के टिकिट भी बुक करवाए गए। कार्यक्रम में दिलीप सिंह नारेला, नरेंद्र सिंह लाखा का खेडा, अजय पाल सिंह चारपोटिया, चन्द्रवीर सिह साजियाली, सूर्यकरण सिंह आकोलागढ़, लोकमहेश्वर सिंह आकोलागढ, लक्ष्मण सिंह भाटियो का खेड़ा, लांगच से भगवत सिंह, गर्व राज सिंह, महावीर सिंह, नेपाल सिंह, दशरथ सिंह, घनश्याम सिंह आदि समाजबंधु उपस्थित रहे। इससे पूर्व 19 नवंबर को प्रांत के पुठोली गांव में विशेष शाखा आयोजित हुई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 26 नवंबर को साणंद स्थित राजपूत विकास संघ के कार्यालय में जन्म शताब्दी वर्ष के निमित्त यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक दीवान सिंह काणेटी उपस्थित रहे। 26 नवंबर को ही हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के पाली, बसाई, धोली, बास खुडाना आदि गांवों में अरविंद सिंह बालवा व सहयोगियों द्वारा संपर्क कर जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया गया। वागड़ क्षेत्र में कूंडा चोखले की बैठक 19 नवंबर को कुंडा रावले में आयोजित की गई जिसमें जयन्ती समारोह की विस्तृत जानकारी दी गई एवं विशेष ट्रेन की बुकिंग के बारे में बताया गया। उपस्थित सभी गांवों के प्रतिनिधियों द्वारा चर्चा करके यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक घर से कम से कम एक व्यक्ति कार्यक्रम में भाग लें। इस हेतु ग्राम स्तर पर दायित्व सौंपे गए। इस अवसर पर ठाकुर राजेन्द्र सिंह, नाथू सिंह, विक्रम सिंह, भारत सिंह, लक्ष्मण सिंह, गिरवर सिंह, हरिश्चंद्र सिंह, भोपाल सिंह कुंडा, मोहन सिंह ठीकरिया चन्द्रावत, शिव सिंह खेरवा, महेंद्र सिंह कुशलपुरा, लाल सिंह बरोडा, विक्रम सिंह गरनावट, ओंकार सिंह, जसवंत सिंह, वीरभद्र सिंह, इंद्रजीत सिंह ऊदाजी का गड़ा, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह का गड़ा, शम्भू सिंह, लाखन सिंह लाम्बापारडा सहित अनेकों समाजबंधु उपस्थित रहे। 15 नवंबर को चुंडियावाडा गांव मे गंगेश्वर महादेव के प्रांगण में बैठक रखी गई जिसमें अमरतिया चोकला के अध्यक्ष रणजीत सिंह चुंडियावाड़ा एवं वीर दुगार्दास सेवा संस्थान चुंडियावाड़ा के कार्यकर्ता समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। कल्लाजी विकास सेवा संस्थान जयसमन्द में भी जन्मशताब्दी समारोह के निमित्त संपर्क व तैयारी बैठक आयोजित की गयी। बैठक में राव साहब बंबोरा, नाथू सिंह पानी कोटडा, शंभू सिंह, लाखन सिंह, घनश्याम सिंह लाम्बापारडा सहित अन्य समाजबंधु उपस्थित रहे। जालौर संभाग के पाली प्रांत के रानी फालना मण्डल में खिन्दारागांव में संपर्क बैठक आयोजित की गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक हीर सिंह लोडता सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। पाली शहर में मनोहर सिंह निम्बली उडा, नरेंद्र सिंह, परबत सिंह भुणास, रुपेन्द्रपाल सिंह आदि द्वारा संपर्क किया गया। सोजत मण्डल में बहादुर सिंह सारंगवास, गजेन्द्र सिंह, श्रवण सिंह, शिव सिंह ढूंढा व लक्ष्मण सिंह रायरा ने संपर्क किया एवं सारंगवास, बीजा गुड़ा, देवली, हुला, लाडपुरा, केरखेडा आदि गांवों में बैठकें आयोजित कर सभी को जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। केलवाद स्थित चारभुजा मंदिर में भी बैठक आयोजित की गई। 20 नवंबर को सिरोही जिले के पिंडवाड़ा तहसील के सांगवाडा, काछौली और तरूंगी गांवों में संपर्क किया गया। गुमान सिंह व मोड़ सिंह सांगवाड़ा तथा महिपाल सिंह उंदरा संपर्क के दौरान साथ रहे। जालोर प्रान्त के आहोर मंडल में बालोत पट्टा, तखतगढ, बलुपुरा व सिंधलावटी क्षेत्र में संपर्क यात्रा की गई जिसमें विशेष ट्रेन के 100 से अधिक टिकिटों की बुकिंग की गई। संपर्क यात्रा में मदन सिंह थुम्बा, देवी सिंह प्रतापगढ़, भरत सिंह मंडला, वीर बहादुर सिंह असाडा, विजयपाल सिंह रोडला, गजेंद्र सिंह बलुपुरा, छैल सिंह मानपुरा, पुरण सिंह राजपुरा, महिपाल सिंह मोरू, महावीर सिंह सेदरिया बालोतान, कुलदीप सिंह गरनिया, गोपाल सिंह आलावा, वाग सिंह पांचोटा, सौभाग्य सिंह पांचोटा आदि सहयोगी सम्मिलित रहे।

कुंडा

चुंडियावाड़ा

पुठोली

कुआड़ा

(पृष्ठ एक का शेष)

धंधुका...

इसलिए पूरे शिविर के दौरान जागृत रहकर यहां की प्रत्येक गतिविधि में भाग लें और किसी भी प्रकार की लापरवाही अथवा प्रमाद न करें। शिविर के अंतिम दिन उन्होंने अपने विदाई संदेश में कहा कि यहां जिस स्नेह और अपनत्व को हमने पाया है, उस स्नेह और अपनत्व को हमें समाज में आगे प्रसारित करना है और पूरे समाज को एक सूत्र में बांधने का कार्य करना है। जिस प्रकार इस शिविर में हम सभी एक परिवार के रूप में इन सात दिनों तक रहे हैं, उसी प्रकार पूरे समाज को अपना परिवार मानते हुए हमें संघ के संदेश को सभी तक पहुंचाना है। ईश्वर ने नारी को माता के रूप में बहुत बड़ा दायित्व दिया है। उस दायित्व को निभाने के लिए हमें स्वयं को तैयार करना है। संघ का यह प्रशिक्षण उसी की भूमिका है। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें मयार्दाओं का पालन करना सिखाता है और उसके लिए हमें आत्मसंयम और अनुशासन का प्रशिक्षण देता है। अपने भीतर इन गुणों को विकसित करके ही हम माता के रूप में एक मर्यादित, संयमी और अनुशासित संतान का निर्माण कर सकती हैं। इसलिए संघ की शाखा और शिविरों के माध्यम से इस अभ्यास को निरंतर बनाए रखें। शिविर में मोरचंद, खंढेरा, मेघपर, काणेटी, साणंद, धोलेरा, वसई, साढीडा, वाटलिया, जसका आदि गांवों की 70 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। छात्रावास अधीक्षक राजेन्द्र सिंह सांढीडा एवं चुड़ासमा समाज द्वारा व्यवस्था का जिम्मा संभाला गया।

पूर्व प्रधानमंत्री...

उनके पनपाये राजनेताओं ने उतरी भारत में दशकों तक सत्ता सुख भोगा लेकिन उनको इसका श्रेय देने से सदैव बचते रहे और इसीलिए देश का वह नायक आज नैपथ्य में चला गया है। सुदूर दक्षिण के राज्य तमिलनाडु के मुख्यमंत्री स्टालिन ने उस नैपथ्य से पर्दा हटाया है और राजा से फकीर बनकर देश की तकदीर कहलाने वाले महामना विश्वनाथ प्रताप सिंह की प्रतिमा का अनावरण तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में स्थित प्रेसीडेंसी कॉलेज में 27 नवंबर को समारोह पूर्वक करवाया गया। प्रतिमा का अनावरण तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन द्वारा किया गया। उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव भी अनावरण कार्यक्रम में उपस्थित रहे। पूर्व प्रधानमंत्री की पत्नी सीता कुमारी एवं दोनों पुत्र अजेय सिंह एवं अभय सिंह भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सभी वक्ताओं ने स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह जी द्वारा देश में सामाजिक न्याय को सुरक्षित करने के लिए प्रधानमंत्री के रूप में उनके द्वारा किए गए कार्यों को स्मरण करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। आशा है कि इससे उनके राजनीतिक उत्तराधिकारियों में भी कृतज्ञता जागेगी और वे उन्हें अपने अभ्युदय का श्रेय दे सकेंगे और साथ ही उनके साहस भरे निर्णय से जो वर्ग आज मुख्यधारा में शामिल होकर सबके साथ कदम मिला रहा है, वह भी अपनी कृतघ्नता को दूर करने का प्रयास करेगा।

(पृष्ठ दो का शेष)

विभिन्न स्थानों...

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक श्याम सिंह चिरनौटिया व देवेन्द्र सिंह बरवाली भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जोधपुर में श्री गुरु जलंधर नाथ शाखा का दीपावली स्नेहमिलन सेखाला गांव में स्थित गोगादेव मंदिर पर किया गया जिसमें सभी बंधुओ ने एक दूसरे को दीपावली पर्व की मंगल कामनाएं दी। सभी स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी को पुष्पांजलि भी अर्पित की गई। महेंद्र सिंह सेखाला ने दीपावली पर्व का महत्त्व बताया और दिल्ली में होने वाले पूज्य श्री तनसिंह जी जन्म शताब्दी समारोह का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम का संचालन भोम सिंह ने किया। इस अवसर पर पदम सिंह, देवेंद्र सिंह सहित अनेकों स्वयंसेवक उपस्थित रहे। गंगापुर में सहाड़ा मंडल का स्नेहमिलन कार्यक्रम भी 13 नवंबर को संपन्न हुआ। इसी दिन आकोड़ा शाखा में भी दीपावली स्नेह मिलन रखा गया। 15 नवंबर को बीकानेर शहर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में दीपावली स्नेह मिलन आयोजित हुआ जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

संघशक्ति...

बरवाली गाँव में श्री बालाजी मंदिर की स्थापना के बारे में जानकारी ठा. चैन सिंह द्वारा दी गई। कार्यक्रम का संचालन गजेन्द्र सिंह बरवाली ने किया व बरवाली फाउंडेशन की युवा टीम द्वारा व्यवस्था का जिम्मा संभाला गया। गोपाल सिंह, इन्द्र सिंह, रिछपाल सिंह, राजेन्द्र सिंह, चेन सिंह, शंकर सिंह, देवेंद्र सिंह, गजेन्द्र सिंह, जयपाल सिंह, शेर सिंह, लक्ष्मण सिंह, भंवर सिंह, धारा सिंह, आदित्य सिंह, दीपेन्द्र सिंह, रामस्वरूप शर्मा , जलेंद्र सिंह, सोनू सिंह, हरजीत सिंह, अजय सिंह, सुरेन्द्र सिंह, चंद्रवीर सिंह, महेंद्र सिंह, कृष्ण सिंह, रूप सिंह, हितेन्द्र सिंह, अरविंद सिंह, जितेंद्र सिंह व श्रीजीत सिंह आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आशु सिंह लाछड़ी ने प्राप्त की पीएचडी की उपाधि

सीमा सड़क संगठन में उप निदेशक के रूप में कार्यरत भारतीय इंजीनियरिंग सेवा के अधिकारी आशु सिंह लाछड़ी. ने अभियांत्रिकी में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। उल्लेखनीय है कि आशु सिंह लाछड़ी दो बार राष्ट्रपति और राज्यपाल द्वारा राजस्थान गौरव से सम्मानित हो चुके हैं। वे क्षत्रिय रत्न व वीर दुर्गादास राठौड़ सम्मान भी प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने इस उम्र में पीएचडी कर-के यह सिद्ध किया है कि सीखने की कोई आयु नहीं होती और जीवन के किसी भी पड़ाव पर नई दिशा में यात्रा प्रारंभ की जा सकती है।

वीर बंदा सिंह बहादुर की जयंती मनाई

मातृभूमि और धर्म की रक्षा के लिए संन्यास छोड़ कर शस्त्र उठाने वाले वीर बंदा सिंह बहादुर की जयंती कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी (26 नवंबर) को जबलपुर बालाजी मंदिर में जय क्षात्रधर्म सोशल फाउंडेशन द्वारा मनाई गई। कश्मीर के राजौरी में एक राजपूत परिवार में जन्मे बंदा सिंह ने 15 वर्ष की आयु में घर त्याग कर वैराग्य धारण किया था लेकिन 38 वर्ष की आयु में सिखो के दसवें गुरु गोविंद सिंह जी के आह्वान पर संन्यास छोड़ कर धर्म की रक्षा के लिए योद्धा बने। जयंती में फाउंडेशन के दीपक सिंह परिहार, अमन सिंह ठाकुर, अंकित सिंह राठौड़, आशीष सिंह ठाकुर, राजीव सिंह ठाकुर, वीरेंद्र सिंह राजपूत, रत्नेश सिंह ठाकुर, मुकेश सिंह राजपूत आदि सम्मिलित रहे।

दलित समाज की बेटी का मायरा भरा

नसीराबाद क्षेत्र के कालेसरा गांव में मेघवाल समाज की दो बेटियों की शादी में मायरा भरने का दायित्व राजपूत समाज द्वारा निभाया गया। मेघराज सिंह रॉयल एवं समताराम महाराज ने सहयोगियों के साथ मिलकर दलित कन्याओं के विवाह में सहयोग कर सामाजिक सौहार्द और सद्भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया।

नरपत सिंह बस्तवा को पितृशोक

उम्मेदसिंह जी इंदा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक नरपत सिंह बस्तवा के पिता **श्री उम्मेद सिंह जी इंदा** का देहावसान 27 नवंबर 2023 को हो गया। 70 वर्षीय इंदा भारतीय सेना की 8वीं राजपूताना राइफल्स में 18 वर्ष की सेवा के पश्चात सेवानिवृत्त हुए थे। वे अपनी उत्कृष्ट सेवाओं के कारण सैन्य पदक सहित कई अन्य प्रशस्तियों से सम्मानित हो चुके थे। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

वयोवृद्ध स्वयंसेवक जालम सिंह मुंडोता का निधन

जालम सिंह जी मुंडोता

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **जालम सिंह मुंडोता** का देहावसान 20 नवंबर 2023 को 90 वर्ष की आयु में हो गया। उन्होंने अपने जीवन काल में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कुल 70 शिविर किए जिनमें 14 उच्च प्रशिक्षण शिविर, 18 माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर एवं 38 प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर शामिल हैं। उन्होंने अपना प्रथम शिविर सन् 1952 में किया था। उनके पुत्र महिपाल सिंह मुंडोता भी श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक हैं। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोकाकुल परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

चुनावों ने दिखाया और हमने देखा

लोकतान्त्रिक व्यवस्था में चुनाव सत्ता संग्राम का स्वरूप होता है। इस व्यवस्था में सत्ता तलवारों की धार पर नहीं बल्कि मतदाताओं की राय से हासिल होती है इसलिए यहां चुनाव भी एक युद्ध की तरह लड़े जाते हैं और युद्ध का सा ही उन्माद छाया रहता है। विगत दिनों राजस्थान राज्य में हम ऐसे ही युद्धान्माद से गुजरे हैं। यह लेख आप तक पहुंचेगा तब तक इस संग्राम का परिणाम हमारे सामने आ जाएगा और पता चल जाएगा कि कौन जीता और कौन हारा? किसकी सरकार बन रही है और कौन सरकार से वंचित रह गया है? किसके सिर पर ताज पहराया जाएगा और कौन अपने सिर को खुजलाता ही रह जाएगा?

आपको ऊपर के उल्लेख में उन्माद शब्द पर आक्षेप हो सकता है लेकिन जब उचित अनुचित का ध्यान नहीं रखा जाए, किसी भी मर्यादा का उल्लंघन जायज ठहराया जाने लगे और येन केन प्रकारेण अपनी ही बात को सही सिद्ध करने का प्रयास किया जाए तो इसे उन्माद ही कहा जा सकता है और ऐसे उन्माद के समय में अस्थिर चित्त के लोग जैसा आचरण किया करते हैं, वह भी हमने देखा और स्थिर चित्त के लोग जैसा आचरण किया करते हैं वह भी हमने देखा। पूरे प्रदेश की अपेक्षा हम हमारे समाज की बात करें तो पूरी संभावना है कि नयी विधानसभा में इस बार हमारे समाज की भागीदारी निवर्तमान विधानसभा की अपेक्षा अधिक होगी। सही संख्या तो यह लेख आप तक पहुंचेगा तब तक आपको पता चल ही जाएगी, लेकिन समाज रूप में हमारा व्यवहार इस उन्माद के वातावरण में कैसा रहा, हम स्थिर चित्त रहे या अस्थिर चित्त के कारण उन्मादी हो गये, यह इस चुनाव ने हमें दिखाया और हमने देखा। समाज रूप में चुनावों में हमारे व्यवहार के लिए हमारे अग्रजों ने श्री प्रताप फाउंडेशन के रूप में एक विचार हमारे सामने रखा था और विगत 20 वर्षों में किसी न किसी रूप में हमने उस विचार को सुना था, समझा था और उसके पक्ष में अपना मंतव्य भी प्रकट किया था। हम हमारे ही द्वारा समर्थित उस मंतव्य पर कितने अडिग रहे, यह भी इस चुनाव ने हमें दिखाया और हमने देखा। हमने देखा कि जो लोग प्रायः कहा करते थे कि राजनीतिक दलों से बात करते समय हमें यह प्रकट करना चाहिए कि श्री प्रताप फाउंडेशन से बात कीजिए, वह जैसा कहेगा हम वैसा ही करेंगे, वे ही लोग जब श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा अपनी मातृसंस्था के सिरमौर को लेकर राज्य के मुख्यमंत्री द्वारा अनेक बार की गई अनावश्यक टिप्पणी का कड़ा विरोध जताया गया तो अपने आपको मुख्यमंत्री जी के निकट सिद्ध करने के बहाने ढूंढने लगे और ऐसे ही एक बहाने को लेकर मुख्यमंत्री जी का धन्यवाद देने पहुंच गये ताकि यह सिद्ध किया जा सके कि हमारे समाज में विघटन है और हम लोग उस कड़े विरोध के साथ नहीं हैं। हम उस विरोध के सेफ्टी वाल्व के रूप में उपलब्ध हैं, आप हमारा उपयोग कीजिए। और आश्चर्य तो तब होता है जब ऐसे लोग ये शिकायत करते हैं कि श्री प्रताप फाउंडेशन कांग्रेस पर दबाव नहीं बना पाया और हमें टिकट नहीं दिला पाया। उनका यह भी तर्क होता है कि उनके लाभ के लिए श्री प्रताप फाउंडेशन को उन टिप्पणियों को सहन करना चाहिए था, उनकी चाह थी कि श्री प्रताप फाउंडेशन को सत्ता का अनुगामी बने रहना चाहिए था लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि श्री प्रताप फाउंडेशन स्वाभिमानी राजपूत कौम का अंग है और उस स्वाभिमान के प्रति अपने दायित्व को समझता है, इसीलिए 2014 के लोकसभा चुनावों में समाज की चाह के अनुरूप जसवंत सिंह जी के सहयोग के लिए सत्ताधारियों की नाराजगी को दरकिनार ही नहीं किया बल्कि उचित अवसर आने पर हजारों की भीड़ में भी उन सत्ताधारियों के समक्ष समाज की भावना को निर्भयता पूर्वक प्रकट किया।

दूसरी तरफ हमने देखा कि भाजपा में तमाम आशंकाओं के बावजूद समाज के विश्वास के बल पर हम दबाव बनाये रखने में सफल हुए और जहां हमारी टिकटों की संख्या कम होने की आशंका थी, वहीं एक बढ़कर 26 हो गई। हालांकि यहां भी एक नकारात्मक पहलू यह रहा कि टिकट देने वाले लोगों में शुमार हमारे राजनेताओं में थोड़ा बेहतर समन्वय होता तो यह संख्या और अधिक बढ़ सकती थी लेकिन उसके बावजूद श्री प्रताप फाउंडेशन इन सभी से लगातार संपर्क एवं समन्वय का प्रयास करता रहा और परिणाम भी प्रकट हुए। कांग्रेस में भी उपलब्ध सूत्रों के माध्यम से अंतिम समय तक प्रयास जारी रहा जिससे हमारे टिकटों की संख्या कम तो नहीं हुई लेकिन हम 14 से आगे नहीं बढ़ पाये।

हमने देखा कि प्रायः राजपूत को टिकट मिलने वाली एक एक विधानसभा सीटों पर अनेक लोग टिकिटार्थी थे, लेकिन अधिकांश पर जिसको टिकट मिली, शेष उसके साथ हो गये और मिलकर चुनाव लड़ा। एक सीट पर तो हमने देखा कि जिस परिवार के सदस्य वहां से पहले विधायक रह चुके थे, उसी परिवार के व्यक्ति ने वहां से निर्दलीय खड़े होने के लिए फार्म लिया लेकिन ज्यों ही राजपूत को टिकट मिली, फार्म नहीं भरा और समर्थन कर दिया जबकि वे लंबे समय से वहां से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे थे। इसी प्रकार समाजिक भाव के अनेक उदाहरण इस चुनाव ने हमें दिखाये जिनमें एक दूसरे के सहयोग के सुखद दृश्य दिखाई दिए। राजनेताओं से बढ़कर अधिकांश आम राजपूत मतदाताओं ने अपने सजातीय उम्मीद्वारों का सक्रिय सहयोग किया और अपने अपने बूथ पर मोर्चा संभाल कर संबंधित उम्मीदवार को चिंतामुक्त किया। यह सब सुखद दृश्य था जिन पर उन्माद का असर नहीं हुआ और समाज को ही परिवार मानकर पारिवारिक भाव के सुंदर व अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत हुए। हमने अनेक जगह हमारे समाज को रणनीतिक रूप से आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हुए भी देखा और हमारे समाज के प्रति द्वेष रखने वाले उम्मीदवारों के विरुद्ध सभी प्रकार के पूर्वाग्रह छोड़कर एकजुट होकर उसके मजबूत विकल्प के साथ लामबद्ध होते हुए भी देखा। अनेक जगह राजनीतिक पार्टियों द्वारा उनके लिए वर्षों से काम करने वाले राजपूतों की उपेक्षा करने के प्रति रोष भी देखा और ऐसे स्थानों पर राजनीतिक पार्टियों को घुटनों पर लाते भी देखा। परिणाम की चिंता किए बिना ऐसे स्थानों पर समाज द्वारा अपने वोट का महत्व स्थापित करते हुए भी देखा लेकिन साथ ही अनेक स्थानों पर राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा स्वयं के प्रति हो रहे अन्याय को व्यक्तिगत स्वार्थ एवं दबाववश चुपचाप सहन करने के कारण समाज द्वारा अन्य समाज के अनचाहे उम्मीदवार को वोट देते हुए भी देखा।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि उन्माद ने असर नहीं किया बल्कि अस्थिर चित्त के लोगों के चित्त पर इसने भरपूर असर किया और हमने मयार्दाओं के तार तार होने के अनेक दृश्य भी देखे। हमने व्यक्तिवाद का नंगा नाच भी देखा और व्यक्तिवाद के विरुद्ध जिहाद छेड़ने की बात करने वाले लोगों को व्यक्तिवाद के अनुयायी बनकर कहीं उसका प्रकट सहयोगी बनते देखा तो कहीं अप्रकट रूप से छिप छिप कर सहयोगी बनते देखा। जिस क्षेत्र में यह बात गर्व से कही जाती थी कि गांव और परिवार के मुखिया की एक आवाज पर पूरा गांव व परिवार चला करता है वहां एक एक परिवार में दुर्भाग्यपूर्ण विघटन भी देखा और सभी समझदार लोगों के चेहरे पर चिंता की लकीरें भी देखी कि यह चुनाव तो बीत जाएगा लेकिन यह विघटन कहां तक ले जाएगा, पता नहीं?

समझदारों की चर्चा चल पड़ी तो याद आया कि इन चुनावों में हमने समझदारों की समझदारी से पर्दे उठते भी देखे और ऐसे समझदारों को तथाकथित समझदार बनते हुए देखा। ऐसे तथाकथित समझदारों द्वारा अपनी समझदारी का उपयोग केवल और केवल अपनी व्यक्तिगत पसंद नापसंद को ही समाज की पसंद नापसंद बनाने की भरपूर कोशिश करते देखा और इसके लिए उनके वाट्सएप समूहों में उनको निरंतर खूंटे तोड़ते हुए देखा। ऐसे तथाकथित समझदार क्योंकि अपनी तथाकथित समझदारी के भ्रम में समाज और समाज के संगठनों से स्वयं के प्रति सदैव विशिष्ट व्यवहार की अपेक्षा करते हैं इसलिए स्वाभाविक रूप से व्यक्तिवादी होते हैं और इसीलिए इन चुनावों में भी इन्हें व्यक्तिवाद की भरपूर उपासना करते देखा। ऐसे लोगों को अपने क्लोज ग्रुप्स में समाज के नेताओं की बुराई करते देखा और सरकार बनने पर मलाई खाने की इच्छा से उन्हीं नेताओं के यहां रात के अंधेरे में हाजिरी लगाते हुए भी देखा। वाट्सएप समूहों और सोशल मीडिया की चर्चा आने पर याद आया कि इन चुनावों मे सोशल मीडिया के अनेक वीरों की वीरता का भरपूर उपयोग नकारात्मकता के प्रसार के लिए होते देखा। इन चुनावों ने इस बात को पुनः पुष्ट कर दिया कि आलोचना करना सबसे सरल काम है और सोशल मीडिया के दौर ने इसे इतना सुलभ बना दिया है कि अब केवल कुछ अंगुलियां चलाकर ही आप मनमर्जी का रायता फैला सकते हैं। आलोचना की बात आई तो यह फिर से पुष्ट हुआ कि आलोचकों की निष्क्रिय और नपूंसक आलोचना को कभी संतुष्ट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि उनकी आलोचना केवल आलोचना करने के लिए होती है। वे संतुष्ट होने के लिए या किसी सृजन के लिए नहीं बल्कि केवल आलोचना करने के लिए आलोचना करते हैं और ऐसे आलोचक उन रुदालियों के समान होते हैं जिनका अस्तित्व ही रोने से जुड़ा होता है, वे जिस दिन रोना बंद कर देंगी, रुदालियां ही नहीं रहेंगी। इसलिए ऐसे आलोचक क्रोध के नहीं बल्कि दया के पात्र हैं और उनके अस्तित्व के लिए उनको आलोचना रूपी नपूंसक पुरुषार्थ करते रहने देना चाहिए और उनके लिए ऐसे अवसर जुटाते रहना चाहिए। वैसे उनके लिए अवसर जुटाने नहीं पड़ते क्योंकि हमारी प्रत्येक हलचल उनके लिए अवसर ही है और हम हमारी हलचल बंद कर नहीं सकते क्योंकि परमेश्वर ने हमें हलचल का अक्षय स्रोत प्रेरणा के लिए उपलब्ध करवाया है।

हम प्रारंभ से सुनते आये हैं कि इतिहास में खांपवाद ने हमारे विघटन में बड़ा सहयोग दिया इसलिए पूज्य तनसिंह जी ने तो इस पर इतनी निर्मम चोट की कि नाम के आगे भी खांप की अपेक्षा गांव का नाम जोड़ने की परंपरा प्रारंभ की और इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में वर्षों तक साथ काम करने के बावजूद एक दूसरे की खांप की जानकारी नहीं हो पाती लेकिन कुछ स्थानों पर इस चुनाव ने यह भी जता दिया कि इतनी निर्मम चोट के बावजूद यह बीमारी अभी बरकरार है और अवसर मिलने पर अभी भी अपना प्रभाव मजबूती से दिखाती है।

चुनावों ने हमें यह भी दिखाया कि जिनका स्वभाव राजनीतिक कुटिलताओं से ओतप्रोत हो जाता है वे अपनी उन कुटिल चालों से बाज नहीं आते। वे अपने प्रेरक और उपासक का भी उपयोग अपनी राजनीति के लिए उसी सहजता से कर लेते हैं जिस सहजता से आपका करते हैं। वे साथ रहकर भी विरोधी का सा व्यवहार कर सकते हैं और विरोधी के साथ रहकर भी उसके विरोधी का सहयोग कर सकते हैं। वे आगामी अवसरों के लिए दोनों को निपटाने के लिए भी काम कर सकते हैं इसलिए यह सर्वसिद्ध है कि जिनके स्वभाव में कुटिल राजनीति प्रवेश कर गई है वे आपके ही नहीं बल्कि किसी के भी अपने नहीं हो सकते और ऐसे लोगों से सदैव सावधान ही रहना चाहिए। इस प्रकार इस चुनाव ने हमें बहुत कुछ दिखाते हुए, बहुत कुछ समझाते हुए अनेक सुखद पहलुओं के दर्शन करवाये तो अनेक कष्टदायक दृश्य भी हमारे सामने प्रस्तुत किए। स्थिर चित्त के अनेक लोगों ने उन्माद को दरकिनार सामाजिक भाव के अर्थ को चरितार्थ किया वहीं समाज ने इस उन्माद में आकंठ डूबे हुए अपने ही लोगों को भी सहन किया जो उसकी सुनने को नहीं बल्कि उसे कुछ सुनाने के लिए आतुर थे और अपेक्षा कर रहे थे कि समाज को निरीह होकर उनकी ही सुननी चाहिए और जैसा वे कहते हैं वैसा ही करना चाहिए।

- कृष्ण सिंह राणीगांव

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org